International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हरियाण का लोक साहित्य और संस्कृति

डॉ कमराज सिंधु

प्रस्तावना -

हरियाणा लोक साहित्य और संस्कृति की अपनी देश में अलग पहचान एवं विशेषता है। लोक साहित्य और संस्कृति का सम्बन्ध किसी देश व क्षेत्र विशेष के सामान्य जन - समुदाय से होता है। समाज में प्रचलित विभिन्न क्रिया - कलाप , परम्पराएँ , अचार - विचार संस्कार , प्रथाएँ , कर्मकाण्ड , आस्था एवं विश्वास , लोक साहित्य और संस्कृति के आधारभूत तत्व माने जाते है। किसी देश या क्षेत्र के नागरिकों की पहचान उनके अपनी सभ्यता , संस्कार रहन - सहन तथा बोली - भाषा साहित्य से की जाती है। जो उस देश या क्षेत्र की संस्कृतिक वैशिष्टय के द्योतक है। सामान्य जनता के जीवन में व्यवहृत होने वाले विभिन्न परिस्थिगत अनिवार्य धर्म तथा कर्म न सिर्फ समाज को गतिशील बनाये रखते है बल्कि उन्हें क्षेत्र - विशेष को एक अलग पहचान दिलाते मे सहायक भी है। लोक साहित्य और संस्कृति के द्वारा समाज की आर्थिक , राजनीतिक , सामाजिक व धार्मिक व्यवस्था का प्रवाह सामूहिक रूप से निरंतर गतिशील रहता है। साहित्य और संस्कृति व्यक्ति एवं समाज के विकास का परिचायक होती है और समाज मजबूत होता है। लोक जीवन ही साहित्य और संस्कृति का अक्षय भण्डार है। साहित्य और संस्कृति समाज को आकार देता है। मानव आदिम काल से अपनी बौद्धिक शक्ति के द्वारा समाज के सभी प्राणियों को प्रभावित एवं आश्चर्यचकित करता रहा है यही लोक साहित्य और संस्कृति मानी जाती है।

लोक साहित्य -

हरियाण का लोक साहित्य और संस्कृति भारत मे बड़ी समृद्ध संस्कृति के रूप मे दिखाई देता है। हरियाणा का नाम लेते ही हमारे मस्तिष्क में एक ऐसे प्रदेश की छवि उभर आती है जिसकी पुरातन धरोहर अत्यंत समृद्ध है और वर्तमान में भी जो देश के सर्वाधिक समृद्ध राज्यों में से एक माना जाता है। वैदिक भूमि हरियाणा भारतीय सभ्यता का पालना कर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रही है। भारतीय परम्पराओं में इस क्षेत्र को सृश्टि की आधात्री की मान्यता दी जाती है, जहां ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ करके सृष्टि का सृजन किया था वह स्थान भी हरियाणा मे पड़ता है। सृजन के इस सिद्धांत की पुष्टि पुरातत्वविद गाय ई.पिलग्रिम की पुरातात्विक खोज में भी मिलता है । वामनपुराण के अनुसार राजा कुरु ने कुरुक्षेत्र की पावन भूमि में सात कोस के क्षेत्र में भगवान शिव के वाहन नंदी को सोने के धार-फार से युक्त हल में जोतकर कृषियुग की शुरुआत की थी । हरियाणा प्रदेश भारत मे खान पान की दृष्टिकोण से समृद्ध माना राज्य जाता है ।हरियाणा प्रदेश की विश्व मे पहचान है ।

हरियाणा के नाम की उत्पत्ति के संबंध में बहुत सी व्याख्याएं हैं | हरियाणा एक प्राचीन नाम है | पुरातन काल में इस भू-भाग को ब्रह्मवर्त, आर्यवर्त और ब्रह्मोप्देष के नाम से जाना जाता था | ये नाम हरियाणा की इस धरा पर भगवान ब्रह्मा के अवतरण; आर्यों का निवास स्थान और वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार पर आधारित हैं । सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह क्षेत्र सृजन की भूमि है और यह धरा स्वर्ग के समान है। इसके अन्य नाम बहुधान्यक व हरियानक इस क्षेत्र में खाद्यान्नों और वनस्पति की प्रचुरता के परिचायक हैं।' जिला रोहतक के बोहर गांव से मिले शिलालेख के अनुसार इस क्षेत्र को हरियानक के नाम से जाना जाता था। यह शिलालेख विक्रमी सम्वत् 1337 के दौरान बलबन काल से सम्बन्धित है। सुल्तान मोहम्मद-बिन-तुगलक के शासनकाल के एक पत्थर पर 'हरियाणा' शब्द अंकित है। धरणीधर ने अपनी रचना अखण्ड प्रकाश में लिखा है कि 'यह शब्द 'हरिबंका' से लिया गया है, जो भगवान हरि की पूजा भगवान इंद्र से जुड़ा है। एक अन्य विचारक, गिरीश चंदर अवस्थी इसकी उत्पत्ति ऋग्वेद से मानते हैं, जिसमें हरियाणा नाम को राजा (वासुराजा) के नाम के साथ सार्वनामिक विशेषण के रूप में प्रयोग किया गया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। उनका मत है कि इस क्षेत्र पर उस राजा ने शासन किया था और इस तरह से इस क्षेत्र का नाम हरियाणा उनके नाम पर पड़ गया।

हरियाणा के लोक साहित्य का गौरवपूर्ण अतीत अनेक मिथकों, किवदंतियों और वैदिक संदर्भों से भरा हुआ है। महर्षि वेदव्यास ने इसी पावन धरा पर महाभारत काव्य की रचना की। पांच हजार साल पहले यहीं पर महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का दिव्य संदेश देकर कर्तव्यबोध कराया था। उन्होंने कहा था कि 'हे मनुष्य तू कर्म कर, फल की चिंता मत कर' तभी से कर्म का यह दर्शन मानवमात्र का प्रकाश स्तंभ की तरह हर समय मार्गदर्शन कर रहा है।

हरियाणा क्षेत्र अनेक युद्धों का साक्षी रहा है क्योंकि यह उत्तर भारत का प्रवेश द्वार है। हूणों, तुर्कों और तुगलकों ने अनेक बार भारत पर आक्रमण किया और हरियाणा की भूमि पर निर्णायक लड़ाइयां लड़ी गईं। 14वीं शताब्दी के अंत में तैमूरलंग ने इसी क्षेत्र से दिल्ली में प्रवेश किया था। 1526 में मुगलों ने पानीपत की ऐतिहासिक भूमि पर इब्राहिम लोधी को पराजित किया। पानीपत में ही 1556 में एक ओर निर्णायक युद्ध लड़ा गया, जिसने सदियों तक मुगलों को अपराजित शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। 18वीं शताब्दी के मध्य में मराठाओं ने हरियाणा पर अपना शासन स्थापित किया। भारत में अहमदशाह दुर्रानी के आक्रमण, मराठा शक्ति के उत्थान और मुगलों के पतन के बाद अंततः अंग्रेजी शासन का आगमन हुआ।

हरियाणा का समाज सदैव विभिन्न जातियों, संस्कृतियों और धर्मों का मिश्रण रहा है। इस भूमि पर ये सब मिले, आपस में एक-दूसरे से जुड़े और एक सच्चे भारतीय बनकर निखरे। यहीं पर हिन्दू संतों और सिख गुरुओं ने विश्व प्रेम ,सद्भाव और भाईचारे का संदेश दिया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महाकवि सूरदास का जन्म हरियाणा के जिला फरीदाबाद में स्थित गांव सीही में हुआ था, जो भारतीय संस्कृति और साहित्य का एक और केन्द्र माना जाता है। भगवान श्री कृष्ण की कथा हरियाणा के हर आदमी की जुबान पर है। पशुओं के प्रति प्रेम और आहार में दूध की प्रचुरता के कारण इसे दूध-दही की नदियों वाले प्रदेश के रूप में विश्वव्यापी प्रसिद्धि मिली।

हरियाणवीं सांग, रागनी, हरियाणवी वेशभूषा, हरियाणवीं हास्य व्यंग्य और खान-पान इस लोक साहित्य और संस्कृति के विशेष अंग है। हरियाणा को एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर गर्व है जो वैदिक काल में वापस जाता है। राज्य लोकगीत में समृद्ध है। हरियाणा के लोगों की अपनी परंपराएं हैं। ध्यान, योग और वैदिक मंत्रों का जप करने की उम्र के पुराने रीति-रिवाजों को अभी भी जनता द्वारा देखा जाता है। मौसमी और धार्मिक त्यौहार इस क्षेत्र की संस्कृति की महिमा करते हैं। हरियाणा के लोक साहित्य की परंपरा का एक अनूठा दृश्य आप यहा आकर देख सकते हो।

लोक लोक साहित्य लोक कथाओं के अध्ययन से यह पाया है कि हरियाणा के लोक साहित्य में प्रचुर मात्रा में जीवन के जुड़े वह सब पहलू जिसके अंदर हमारी लोक मान्यताएं हमारा व्यवहार खानपान हमारी संस्कृति हमारे साहित्य और लोकगीतों के साथ अन्य विधाएं भी इसमें देखने को मिलती है और जीवन के अनेक ऐसे पड़ाव ऐसे रंग जो हम अपने दैनिक जीवन में व्यवहार के रूप में प्रयोग करते हैं हरियाणा के लोक साहित्य में चाहे वह सावन के गीत हैं चौखट के गीत हैं , देवी देवताओं के गीत हैं , प्रेम के गीत इन सब का तालमेल हरियाणवी लोक साहित्य और संस्कृति में देखने को मिलता है हरियाणा में स्त्रियों का प्रमुख त्यौहार तीज माना जाता है तीज के दिन चारों तरफ झूले झूले दिखाई देते हैं 80-80 वर्ष की हमारी माताएं हैं जो झूलों पर बैठ कर अपने प्रेमी को बुलाती है और वह झूले से ही उस टहनी को छूने का प्रयास करते हैं ।सावन के गीतों में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रोमांस का पर्याप्त भंडार है। किसी झूला झूलती नायिका का नायक से प्रथम मिलन होता है तो कोई नायक नायिका को भीगने से बचाने के लिए कभी उस पर चादर ओढ़ आता है तो कभी छतरी और कहीं कोई राह चलता रसिक व्यक्ति झूले पर बैठी किसी सुंदरी की सुंदरता का वर्णन करता है ।गीत के माध्यम से उसको बताने का प्रयास करता है झूला झूलती स्त्रियों के गीतों में सास और ननद की सबसे अधिक बात मिलती है। एक गीत के माध्यम से सासु तो वीरा चूल्हे की आग ननंद भादो की बिजली और ऐसे ही हरियाणवी लोक साहित्य में अनेकों ऐसे संदर्भ आपको मिलेंगे जिसमें हम यह कह सकते हैं कि हरियाणा का लोक साहित्य और संस्कृति बहुत समृद्धि और प्राचीन है।

सावन मास हरियाणवी लोक साहित्य और लोक-संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सावन मास में तीज का त्योहार हरियाणा में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर युवतियाँ व महिलाएं साज-श्रृंगार करती है व हाथों और पैरों पर मेंहदी लगाती है। माता-पिता अपनी विवाहिता बेटियों के ससुराल वस्त्र व श्रृंगार की सामग्री भेजते हैं। तीज के त्यौहार पर बेटियों की अपने पिता के घर आने की प्रथा है। पहले समय में तीज के दिन किसी तालाब के पास मेला लगता था , जहां पेड़ों पर झूला डालकर 'तीज के लोक गीत' गाती हुई बालिकाएं व महिलाएं झूला झूलती थीं। ग्रामीण परिवेश में अभी भी कहीं-कहीं ऐसे आयोजन होते हैं लेकिन आधुनिक भारत में पारम्पारिक रीति-रिवाज अब लुप्तप्राय हैं।

हरियाणा प्रदेश में सरस्वती नदी शदियों से यहाँ बहती रहे उसकी महत्ता आज पूरे विश्व में देखी जा सकती है ।यहां जन-जन में हर्षोल्लास देखने को मिलता है। यहाँ अनेकों अनेक ऐसे अवसर हैं जिससे प्रदेश की यु वा , युक्तियां अपने लो क मंगल के लिए और लोक साहित्य के लिए प्रेरणादायक बने हुए। हरियाणा प्रदेश वैसे तो कृषि प्रधान प्रदेश के रूप में जाना जाता है ।लेकिन फिर भी यहां के रीति रिवाज यहां के त्यौहार या का खानपान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बहुत अधिक महत्वपूर्ण है । लोकजीवन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्वाभाविक है। इसके वास्तविक रूप जानने के लिए हमें लोक जीवन का अध्ययन करना पड़ेगा ।यह लोक जीवन ही लोक साहित्य को जन्म देता है ।। लोकाचार मानव के व्याहर को और समाज के समस्त जीवन को संचालन करता है।

सुडोल- हरियाणा प्रदेश के युवाओं का शरीर उनकी छवि लंबे कद काठी और बलिष्ठ शरीर और दम दमकता चेहरा अलग से ही दिखाई देता है ।यहां का मुख्य पहनावा जो प्रदेश के बुजुर्गों में आपको दिखाई देगा लाल चमड़े की जूतियां धोती कुर्ता और सर पर पगड़ी और कहे तो बहुत सारे ऐसे बुजुर्ग हैं जो रंग बिरंगी पकड़िया पहनते हैं। और मूछों पर ताव देते दिखाई देते हैं। अधिकतर बूढ़े सफेद रंग की पगड़ी पहनना पसंद करते हैं। हरियाणा प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में अलग-अलग पकड़ियों का भी प्रचलन है। शरीर पर खादी का कुर्ता हाथ में लाठी और मचलती चाल यहां के बुजुर्गों में देखी जाती । शालीनता और सद्भाव यहां हरियाणा के सभी बुजुर्गों में विद्यमान है। हरियाणा प्रदेश हाजिर जवाबी के लिए देश मे जाना जाता है। यहां का साहित्य इतना मजेदार और प्रासंगिक भी है। हंसी ठिठोली यहाँ हर मनुष्य में देखी जाती।

आवास- इस प्रदेश के गांव व्यवस्थित हैं अच्छे ढंग से बसे हुए हैं। भले ही पुराने समय मे मकान कच्चे हुआ करते थे लेकिन लोगों के दिल अच्छे हुआ करते थे । जब से मकान पक्के हुए हैं यहां दिल भी पक्के हो गए हैं । कच्ची ईंटों का बनाया हुआ घर ढूंढ कहलाता था । लेकिन आज गांव में लगभग पक्के मकान बने दिखाई देते है। गांव में हवेली का प्रचलन आज से 50 वर्ष पूर्व समाप्त हो गया ।प्रदेश के अनेक ऐसे गांव हैं जिसमें हवेली आज भी देखने को मिलती जाती है। मंदिर ,,चौपाल धर्मशालाएं पर किसी दानी पुरुष का नाम आज भी अंकित है। चौपाल या धर्मशालाएं जो गांव में बनाई जाती थी किसी प्रसिद्ध सांगी को बुलाकर पैसा इकट्ठा किया जाता था ।चंदा इकट्ठा करने का सबसे अच्छा साधन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सांग ही माना जाता था। यह कार्य पूरे गांव के सहयोग से ही संभव हो पाता था चाहे किसी गरीब की बेटी की शादी हो या कोई चौपाल या धर्मशाला बनानी हो चंदा इकट्ठा करने का साधन उस समय केवल सांग परंपरा ही था।

कुआँ- हरियाणा प्रदेश के गांव में सुबह हो या शाम हो कुएं पर अधिक चहल-पहल देखी जाती है । मानों कुएं पर मेला लगा हो ऐसा प्रतीत होता है । सिर पर मटका या टोकणी हाथ में नेजू और बाल्टी लिए नए वस्त्रों पहन कर पनिहारी कुए की ओर जाती दिखाई देती है। उसमें नई नवेली हो और चाहे कोई और पूरे सिंगार के साथ कुए पर पानी भरने जाती। लगभग स्त्रियां जब कुए के लिए पानी भरने जाती है वह संगीत और गीतों के साथ ही अपना सफर तय करती है। स्त्रियां हार सिंगार करके घुंघट करके ही जाती हैं। कोकिल कंठ कुंजन को की किंकणी नाडा और रमझोल के संगीत से सजाकर जब छम छम करके चलती है तो निकट से गुजरने वाले दर्शक ठगे से रह जाते हैं ।यही हरियाणा के लोक साहित्य की पहचान है लोकलहरी की एक पंक्ति में इसका उल्लेख इस प्रकार हुआ है । हुई झरन झरन रंजन चली नीर भर न रल मिल के दो चार सखी । कुआं तो मानो गांव की औरतों के लिए क्लब के समान है औरतें अच्छे से अच्छे कपड़े पहन कर आते हैं और आपस में ठिठोली करती।

सावन के गीत -

तीजां का त्योहार रितु सै सामण की
खड़ी झूल पै मटकै छोह्ली बाहमण की
क्यूं तैं ऊंची पींघ चढ़ावै
क्यूं पड़ कै सै नाड़ तुड़ाव
योह् लरज-लरज के जावै डाल्ही जामण की
तीजां का त्योहार रितु सै सामण की

इस सावन के गीत से हम अपने दैनिक जीवन कि बात करते है यहाँ सावन के गीत का क्या महत्व है ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नांनी नांनी बूंदियां मीयां बरसता हे जी

हां जी काहे चारूं दिसां पड़ेगी फुवार

हां जी काहे सामण आया सुगड़ सुहावण

संग की सहेली मां मेरी झूलती जी

हमने झूलण का हे मां मेरी चाव जी

हां जी काहे सामण आया सुगड़ सुहावणा

सखी सहेली मां मेरी भाजगी जी

हां जी काहे हम तै तो भाज्या ना जाय

पग की है पायल उलझी दूब में जी

नांनी नांनी बूंदियां मीयां बरसता जी

हां जी काहे चारूं पास्यां पड़ेगी फुवार

पं. लखमीचन्द ने अपने साँग 'पद्मावत' में नायिका से कहा है:-

लाख टके का हे माँ मेरी बीजणा हे री कोय धर्या पुराणा हो

खड़िए मैं भीजूं हे माँ मेरी बाग मं री।

काली घटा छाई हे माँ मेरी उगमणी री इन्द्र बरसै मूसलाधार

खड़िए मैं भीजू हे माँ मेरी बाग मं री।

लोक साहित्य का स्वरूप -

साधारण जनता से संबंधित साहित्य को लोकसाहित्य कहना चाहिए। साधारण जनजीवन विशिष्ट जीवन से भिन्न होता है अत: जनसाहित्य (लोकसाहित्य) का आदर्श विशिष्ट साहित्य से पृथक् होता है। किसी देश अथवा क्षेत्र का लोकसाहित्य वहाँ की आदिकाल से लेकर अब तक की उन सभी प्रवृत्तियों का प्रतीक होता है जो साधारण जनस्वभाव के अंतर्गत आती हैं। इस साहित्य में जनजीवन की सभी प्रकार की भावनाएँ बिना किसी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कृत्रिमता के समाई रहती हैं। अत: यदि कहीं की समूची संस्कृति का अध्ययन करना हो तो वहाँ के लोकसाहित्य का विशेष अवलोकन करना पड़ेगा। यह लिपिबद्ध बहुत कम और मौखिक अधिक होता है। वैसे हिंदी लोकसाहित्य को लिपिबद्ध करने का प्रयास इधर कुछ वर्षों से किया जा रहा है और अनेक ग्रंथ भी संपादित रूप में सामने आए हैं किंतु अब भी मौखिक लोकसाहित्य बहुत बड़ी मात्रा में असंगृहीत है। लोक जीवन की जैसी सरलतम , नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकगीतों व लोक-कथाओं में मिलता है , वैसा अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। लोक-साहित्य में लोक-मानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती-गुनगुनाती है। लोक-साहित्य में निहित सौंदर्य का मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य है।

लोकाचार -

लोकाचार के अंतर्गत आचार विचार एवं व्यावहारिकता तथा विभिन्न लोकमान्यताओं से संबद्ध साहित्य आता है। आचार-विचार के लिए रचित साहित्य में भावनाओं और मान्यताओं का प्रवेश है किंतु व्यवहार के लिए रचे गए साहित्य में यह बात कम देखने को मिलती है। व्यवहार की विशेषता लोकसाहित्य में मुख्य रूप से देखने को मिलती है। आपसी व्यवहार की बात तो जाने दें। यहाँ साँप को भी दूध पिलाया जाता है। वृक्ष (बरगद, पीपल) को भी बाबा कहा जाता है और बदली तथा नदियाँ बहन का रूप धारण करती हैं। इसी तरह अनेक अमानवीय तत्वों से तथा हिंसक जंतुओं से संबंध जोड़कर सारी सृष्टि को एक रूप में बाँधा गया है। इस संदर्भ में रचे हुए साहित्य का मूल उद्देश्य व्यावहारिकता के आधार पर सरल एवं सुखी जीवन व्यतीत करना है। यही कारण है कि जनजीवन एक रिश्ते में बँधा हुआ है और जातीय भेदभाव , जो भीषण रूप से व्याप्त हैं , उसकी दीवार को तोड़ नहीं सके हैं। दादी दादा , भाई बहन आदि के रिश्ते पूरे गाँव में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बिना किसी जातीय भेदभाव के चला करते हैं। विभिन्न अवसरों के लिए प्रचलित लोकाचार भी इसी विधा के अंग हैं।

लोक साहित्य का स्थान –

आज के संदर्भ मे उपर्युक्तविवेचन से लोकसाहित्य का स्थान स्पष्ट हो जाता है किंतु धरातल से उठनेवाले इस साहित्य ने अपना एक शीर्षस्थ स्थान भी बनाया है जहाँ उसे वैदिक साहित्य के समकक्ष आसन प्राप्त है। प्रमाण यह है कि हमारे लोकजीवन के बहुत से और विशेषकर सांस्कारिक तथा धार्मिक कार्य वैदिक मंत्रों से पूर्ण होते हैं। जहाँ ये मंत्र संस्कृत में पढ़े जाते हैं वहीं ग्राम्याओं द्वारा गाए जानेवाले लोकगीत तथा लोकाचार पर आधारित अन्य क्रियाकलाप भी चलते रहते हैं। एक ओर पुरोहित मंत्राच्चार करता है तो दूसरी ओर ग्रामीण स्त्रियाँ गीत गाती हैं। मुंडन , कर्णवेध, यज्ञोपवीत तथा विवाह आदि संस्कारों पर और मकान , धर्मशाला, कुंआँ, तालाब तथा पोखर आदि का शुभारंभ करते समय भी मंत्र तथा लोकगीत साथ-साथ चलते हैं। ऐसा एक ही सांस्कारिक एवं धार्मिक तथा परमार्थ का कार्य लोकजीवन में नहीं मिलता जिसमें वैदिक साहित्य के साथ लोकसाहित्य को स्थान न प्राप्त हो। शिक्षा का प्रसार होने के कारण भी गाँवों की बोलियों में गीत गानेवाले पुरुषों एवं स्त्रियों का अभाव होता जा रहा है। ऐसा लग रहा है कि कुछ दिनों में विभिन्न संस्कारों के अवसर पर गाए जानेवाले प्राचीन लोकगीतों का लोप हो जाएगा और उनके स्थान पर नवीन गीत स्थान ले पाएँगे या यदि इच्छा हुई तो लोकसाहित्य के संग्रहों का देख-देख कर पढ़ी लिखी स्त्रियाँ गीत गाकर काम चलाएँगी। इसी तरह वर्तमान युग की घटनाएँ भी इसमें स्वीकार की जा रही हैं। झाँसी की रानी , कुँवर सिंह , गांधी जी , सुभाषचंद्र, भगत सिंह , खुदीराम एवं चंद्रशेखर आजाद आदि

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लोकसाहित्य में प्रतिष्ठा के साथ जीवित हैं। ये वीर सेनानी उसी कड़ी में जोड़े गए हैं जिनमें प्राचीन काल के वीरों के नाम आते हैं।

निष्कर्ष – लोक साहित्य और संस्कृति हमारे जीवन और मौलिक ता का आधार तत्व रहा है। आज प्रदेश और देश में विकास और उत्थान के नाम पर मानवता के पोषण तत्वों के साथ जो खिलवाड़ किया जा रहा है वह मार्ग अशान्ति और विनाश का है । देर सवेर इसको हमें समझना होगा । लोकसाहित्य और संस्कृति केवल गाँव या कृषि चेतना का विषय नहीं है बल्कि उसके द्वारा हम अपनी जीवन शैली और सामाजिक आर्थिक ढाँचे को और ज्यादा मजबूत उदार और समतावादी रूप दे सकते है। भौतिक विज्ञान की सार्थकता इसी बात में निहित होती दिखाई दे रही है । जब हम अनुभूतियों को भी महत्व प्रदान करें और लोकसाहित्य और संस्कृति को हमारी अनुभूतियों को अधिक सक्षम और मजबूत बनाने मे सहायक होगी तब ही हमार साहित्य सुदृढ़ होगा ।तब जीवन में कोमलता प्रेम और पारिवारिकता के लिए लोकसाहित्य को अंगीकार करना आवश्यक होगा । जिससे मानव मात्र के गुणों को विस्तृत करके एक मजबूत समाज का निर्माण किया जा सकेगा । लोक साहित्य और संस्कृति के प्रति हमारी जबाब देही होगी तब ही हम एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकते है ।

संदर्भ-

हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य –डॉ शंकर लाल यादव ,हिंदुश्तानी एकेडेमी इलाहबाद ।

पंडित लख्मी चंद ग्रंथवाली –डॉ पूर्ण चंद शर्मा ,हरियाणा साहित्य आकदमी पंचकुला

हरियाणा के लोक गीत –डॉ साधु राम शारदा , हरियाणा साहित्य आकदमी पंचकुला

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जींद आँचल की लोककथाओं का सांस्कृतिक एव साहित्यिक अध्ययन –डॉ मंगल देव लाम्बा, हरियाणा साहित्य आकदमी पंचकुला

लोक साहित्य के प्रतिमान –डॉ कुंदन लाल उत्प्रेती ,भारत प्रकाशन मंदिर ,अलीगढ़

हरियाणा सांग का उद्भव और विकास -डॉ राम मेहर ,मनुराज प्रकाशन करनाल

लोक धर्मी नाट्य परंपरा –डॉ श्याम परमार

हरियाणा के संगों में सौंदर्य निरूपण- विजेंद्र सिंह
हरियाणा की सांस्कृतिक शब्दावली का अध्ययन- विष्णु दत्त भारद्वाज
लोक मंच की कहानियां - श्री राजाराम शास्त्री

अध्यक्ष हिन्दी विभाग

दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय,कुरुक्षेत्र विश्वविधालय कुरुक्षेत्र